

NTA UGC NET Exam Paper 1

UNIT 10

HIGHER EDUCATION

उच्च शिक्षा

Previous Year Questions

In Hindi & English



36) Match List I with List II

List I	List II
A. State with the highest number of universities	I. Sikkim
B. State with the lowest number of universities	II. Rajasthan
C. State with the highest GER in higher education	III. Bihar
D. State with the lowest GER in higher education	IV. Mizoram

Choose the correct answer from the options given below:

सूची -I को सूची -II से सुमेलित कीजिए :

सूची -I	सूची -II
A. विश्वविद्यालयों की अधिकतम संख्या वाला राज्य	I. सिक्किम
B. विश्वविद्यालयों की न्यूनतम संख्या वाला राज्य	II. राजस्थान
C. उच्च शिक्षा में उच्चतम जीईआर वाला राज्य	III. बिहार
D. उच्च शिक्षा में निम्नतम जीईआर वाला राज्य	IV. मिजोरम

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :

[Question ID = 1991][Question Description = S2_qSNz_PG_GP10_Q41]

1. A -I , B -II , C -IV , D -III

[Option ID = 7961]

2. A -II , B -IV , C -III , D -I

[Option ID = 7962]

3. A -III , B -IV , C -I , D -II

[Option ID = 7963]

4. A -II , B -IV , C -I , D -III

[Option ID = 7964]

37) The oldest university in India was:

भारत में सबसे पुराना विश्वविद्यालय कौन सा था ?

[Question ID = 1992][Question Description = S2_qSNz_PG_GP10_Q42]

1. Nalanda/नालंदा

[Option ID = 7965]

2. Takshashila/तक्षशिला

[Option ID = 7966]

3. Vikramshila/विक्रमशिला

[Option ID = 7967]

4. Mithila/मिथिला

[Option ID = 7968]

38) Central Universities are:

- A. established by the UGC
- B. established by an act of the Parliament
- C. established by the Department of Education, Government of India
- D. funded by the Central government
- E. Funded by the 'Niti Ayog'

Choose the *correct* answer from the options given below:

केंद्रीय विश्वविद्यालय -

- A. यू जी सी द्वारा स्थापित किए जाते हैं
- B. संसद के एक अधिनियम द्वारा स्थापित किए जाते हैं
- C. भारत सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा स्थापित किए जाते हैं
- D. केंद्रीय सरकार द्वारा वित्त पोषित होते हैं
- E. 'नीति आयोग' द्वारा वित्त पोषित होते हैं

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

[Question ID = 1993][Question Description = S2_qSNz_PG_GP10_Q43]

1. A and D only/केवल A और D

[Option ID = 7969]

2. C and E only/केवल C और E

[Option ID = 7970]

3. B and D only/केवल B और D

[Option ID = 7971]

4. B and E only/केवल B और E

[Option ID = 7972]

39) Gross Enrolment Ratio (GER) in higher education calculated as:

उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) की गणना निम्नानुसार की जाती है :

[Question ID = 1994][Question Description = S2_qSNz_PG_GP10_Q44]

1. $\frac{\text{Number of enrolments in higher education}}{\text{Total population in the age group of 18-23}} \times 100 / \frac{\text{उच्च शिक्षा में नामांकन की संख्या}}{18-23 \text{ के आयु समूह में कुल जनसंख्या}} \times 100$

[Option ID = 7973]

2. $\frac{\text{Number of enrolments in higher education}}{\text{Total population in the age group of 18-23}} / \frac{\text{उच्च शिक्षा में नामांकन की संख्या}}{18-23 \text{ के आयु समूह में कुल जनसंख्या}}$

[Option ID = 7974]

3. $\frac{\text{Number of enrolments in higher education in the age group 18-23}}{\text{Total population in the age group of 18-23}} / \frac{18-23 \text{ के आयु समूह में उच्च शिक्षा में नामांकन की संख्या}}{18-23 \text{ के आयु समूह में कुल जनसंख्या}}$

[Option ID = 7975]

4. $\frac{\text{Number of enrolments in higher education in the age group 18-23}}{\text{Total population in the age group of 18-23}} \times 100 / \frac{18-23 \text{ के आयु समूह में उच्च शिक्षा में नामांकन की संख्या}}{18-23 \text{ के आयु समूह में कुल जनसंख्या}} \times 100$

[Option ID = 7976]

40) Choice-based credit system of index graduate level includes:

- A. Core Course
- B. Elective Course
- C. Ability Enhancement Course
- D. Environment Education Course

E. English Communication Course

Choose the *correct* answer from the options given below:

अवर स्नातक स्तर पर चयन आधारित क्रेडिटप्रणाली (सी बी सी एस) में निम्नलिखित शामिल हैं :

- A. मूल (कोर) कोर्स
- B. ऐच्छिक कोर्स
- C. योग्यता संवर्धन कोर्स
- D. पर्यावरण शिक्षा कोर्स
- E. अंग्रेजी संप्रेषण कोर्स

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

[Question ID = 1995][Question Description = S2_qSNz_PG_GP10_Q45]

1. A, B and C only/केवल A, B और C

[Option ID = 7977]

2. B, C and D only/केवल B, C और D

[Option ID = 7978]

3. C, D and E only/केवल C, D और E

[Option ID = 7979]

4. A, B and E only/केवल A, B और E

[Option ID = 7980]

36)

The reforms initiated under the Rashtriya Uchchattar Shiksha Abhiyaan (RUSA) aim at:

- (A) Push for greater accountability and autonomy of state institutions
- (B) Improving the quality of education and infrastructure
- (C) Formulation of stringent regulations to curb commercialization of higher education
- (D) Increase in GER upto 50 percent
- (E) Efficient monitoring and continuous feedback mechanism

Choose the correct answer from the options given below:

- (1) (A), (B) and (C) only
- (2) (A) and (B) only
- (3) (A), (B), (C) and (D) only
- (4) (B), (C), (D) and (E) only

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (आर यू एस ए) के अन्तर्गत किये गये सुधारात्मक उपायों का उद्देश्य है :

- (A) राज्य संस्थाओं की अधिक जिम्मेदारी तथा स्वाचरता पर बल देना।
- (B) शिक्षा तथा अवसंरचना की गुणवत्ता में सुधार करना।
- (C) उच्च शिक्षा के वाणिज्यीकरण को रोकने के लिए कड़े विनयमनों का निर्माण करना।
- (D) जी ई आर को बढ़ाकर 50 प्रतिशत करना
- (E) कार्यक्षम निगरानी तथा सतत प्रतिपुष्टि तंत्र

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) केवल (A), (B) और (C)
- (2) केवल (A) और (B)
- (3) केवल (A), (B), (C) और (D)
- (4) केवल (B), (C), (D) और (E)

[Question ID = 1041][Question Description = 141_00_General_19_OCT22_Q41]

- 1. 1 [Option ID = 4161]
- 2. 2 [Option ID = 4162]
- 3. 3 [Option ID = 4163]
- 4. 4 [Option ID = 4164]

37)

According to National Education Policy (2020), National Higher Education Regulatory Council will be the single point regulator for all disciplines except

- (1) Teacher Education
- (2) Medical and Legal education
- (3) Agricultural sciences
- (4) Management

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अनुसार उच्च शिक्षा नियामक परिषद निम्नलिखित में से किसको छोड़कर सभी विषयों के लिये एकल बिन्दु नियामक होगी ?

- (1) शिक्षक शिक्षा
- (2) चिकित्सीय और विधिक शिक्षा
- (3) कृषि विज्ञान
- (4) प्रबंधन

[Question ID = 1042][Question Description = 142_00_General_19_OCT22_Q42]

- 1. 1 [Option ID = 4165]
- 2. 2 [Option ID = 4166]
- 3. 3 [Option ID = 4167]
- 4. 4 [Option ID = 4168]

39)

Match List I with List II :

List I	List II
(A) National Education Policy	(I) 1993
(B) National Policy on Education	(II) 2009
(C) National Knowledge Commission	(III) 1986
(D) Learning without burden Report of the National Advisory Committee	(IV) 2020

Choose the correct answer from the options given below:

- (1) (A) – (IV), (B) – (II), (C) – (III), (D) – (I)
- (2) (A) – (IV), (B) – (III), (C) – (I), (D) – (II)
- (3) (A) – (IV), (B) – (III), (C) – (II), (D) – (I)
- (4) (A) – (IV), (B) – (I), (C) – (II), (D) – (III)

सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए :

सूची I	सूची II
(A) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (नेशनल एजुकेशन पॉलिसी)	(I) 1993
(B) शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय नीति (नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन)	(II) 2009
(C) राष्ट्रीय ज्ञान आयोग	(III) 1986
(D) राष्ट्रीय सलाहकार समिति की भार विहीन अधिगम रिपोर्ट	(IV) 2020

नीचे दिए गए विकल्पों से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) (A) – (IV), (B) – (II), (C) – (III), (D) – (I)
- (2) (A) – (IV), (B) – (III), (C) – (I), (D) – (II)
- (3) (A) – (IV), (B) – (III), (C) – (II), (D) – (I)
- (4) (A) – (IV), (B) – (I), (C) – (II), (D) – (III)

[Question ID = 1044][Question Description = 144_00_General_19_OCT22_Q44]

1. 1 [Option ID = 4173]
2. 2 [Option ID = 4174]
3. 3 [Option ID = 4175]
4. 4 [Option ID = 4176]

40)

Given below are two statements: One is labeled as Assertion A and the other is labeled as Reason R.

Assertion A : Universities play a key role in building a symbiotic relationship between the nation, state and society

Reason R : Universities are centres for creation and transmission of knowledge

In the light of the above statements, choose the correct answer from the options given below:

- (1) Both A and R are correct and R is the correct explanation of A
- (2) Both A and R are correct but R is NOT the correct explanation of A
- (3) A is correct but R is not correct
- (4) A is not correct but R is correct

नीचे दो कथन दिए गए हैं। एक अभिकथन (Assertion A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण (Reason R) के रूप में :

अभिकथन A : विश्वविद्यालय राष्ट्र, राज्य तथा समाज के बीच सहजीवी संबंध के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

कारण R : विश्वविद्यालय ज्ञान के सृजन तथा प्रसार का केंद्र हैं।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए।

- (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
- (2) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या नहीं है।
- (3) A सही है लेकिन R सही नहीं है।
- (4) A सही नहीं है लेकिन R सही है।

[Question ID = 1045][Question Description = 145_00_General_19_OCT22_Q45]

1. 1 [Option ID = 4177]
2. 2 [Option ID = 4178]
3. 3 [Option ID = 4179]
4. 4 [Option ID = 4180]

36)

Some of the most notable universities that evolved during ancient period in India were situated at:

A. Takshashila

B. Vikramshila

C. Jagaddala

D. Odantapuri

E. Nalanda

Choose the **correct** answer from the options given below:

1. A, B, C, D and E

2. A, B and E only

3. A, B, C and E only

4. A, B, D and E only

भारत में प्राचीन काल में उद्विकास करने वाले कुछ सर्वाधिक उल्लेखनीय विश्वविद्यालय कहां स्थित थे?

A. तक्षशिला

B. विक्रमशिला

C. जगदल्ला

D. उदांतपुरी

E. नालंदा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

1. A, B, C, D और E

2. केवल A, B और E

3. केवल A, B, C और E

4. केवल A, B, D और E

[Question ID = 581][Question Description = 141_0_GP16_SEP22_S2_Q41]

1. 1 [Option ID = 2321]

2. 2 [Option ID = 2322]

3. 3 [Option ID = 2323]

4. 4 [Option ID = 2324]

37)

In pursuance of the National Council of Teacher Education Act,1993, NCTE was established in the year:

1. 1995
2. 1993
3. 1994
4. 1996

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद अधिनियम, 1993 के अनुरूप एन.सी.टी.ई. को किस वर्ष में स्थापना हुई थी ?

1. 1995
2. 1993
3. 1994
4. 1996

[Question ID = 582][Question Description = 142_0_GP16_SEP22_S2_Q42]

1. 1 [Option ID = 2325]
2. 2 [Option ID = 2326]
3. 3 [Option ID = 2327]
4. 4 [Option ID = 2328]

38)

SWAYAM tries to take the best teaching-learning resources to all students through

1. Seminars
2. Video lectures
3. Classroom teaching
4. Conferences

स्वयम (SWAYAM) निम्नांकित में से किस माध्यम से सर्वोत्कृष्ट शिक्षण-अधिगम संसाधनों को सभी विद्यार्थियों तक ले जाने का प्रयत्न करता है?

1. संगोष्ठी
2. दृश्य व्याख्यान
3. कक्षा में शिक्षण
4. सम्मेलन

[Question ID = 583][Question Description = 143_0_GP16_SEP22_S2_Q43]

1. 1 [Option ID = 2329]
2. 2 [Option ID = 2330]
3. 3 [Option ID = 2331]

39)

Following are the characteristics of Non-Conventional learning:

- A. It is teacher oriented.
- B. It is for improvement of quality.
- C. It is cost effective.
- D. It is linked to employment.
- E. It is on campus.

Choose the **correct** answer from the options given below:

- 1. A, B and C only
- 2. B, C and D only
- 3. A, C and D only
- 4. C, D and E only

गैर-परंपरागत अधिगम के अभिलक्षण हैं :

- A. यह शिक्षक उन्मुख है।
- B. इसका उद्देश्य गुणवत्ता में सुधार लाता है
- C. यह मूल्य-प्रभावी है
- D. यह रोजगार से सम्बन्धित है
- E. यह कैम्पस पर होती है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

- 1. केवल A, B और C
- 2. केवल B, C और D
- 3. केवल A, C और D
- 4. केवल C, D और E

[Question ID = 584][Question Description = 144_0_GP16_SEP22_S2_Q44]

- 1. 1 [Option ID = 2333]
- 2. 2 [Option ID = 2334]
- 3. 3 [Option ID = 2335]
- 4. 4 [Option ID = 2336]

Sl. No.41
QBID:352298

Given below are two statements

Statement I: 'E-Vidhyapeeth' is a Learning Management System and an e-learning infrastructure product.

Statement II: An HTML editor is a software application for creating web pages.

In light of the above statements, choose the **correct** answer from the options given below

- (1) Both Statement I and Statement II are true
- (2)

Both Statement I and Statement II are false

- (3) Statement I is true but Statement II is false
- (4) Statement I is false but Statement II is true

नीचे दो कथन दिए गए हैं :

कथन - I : ई-विद्यापीठ एक अधिगम प्रबंधन प्रणाली और एक ई-लर्निंग इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोडक्ट है।

कथन - II : एच.टी.एम.एल. एडिटर वेब पेजेज को बनाने के लिए सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन है।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

- (1) कथन I और II दोनों सही हैं।
- (2) कथन I और II दोनों गलत हैं।
- (3) कथन I सत्य है , किन्तु कथन II असत्य है।
- (4) कथन I असत्य है , किन्तु कथन II सत्य है।

Match **List I** with **List II**

List I	List II
Core Universal Values	Area Related to Human Personality
A. Truth	I. Emotional
B. Righteous Conduct	II. Spiritual
C. Peace	III. Physical
D. Non-violence	IV. Intellectual

Choose the **correct** answer from the options given below:

- (1) A - IV, B - III, C - I, D - II
- (2) A - III, B - I, C - II, D - IV
- (3) A - III, B - II, C - IV, D - I
- (4) A - IV, B - I, C - III, D - II

सूची -I को सूची -II से सुमेलित कीजिए :

सूची -I	सूची -II
मूल सार्वभौमिक मूल्य	मानव व्यक्तित्व से संबंधित क्षेत्र
A. सत्य	I. संवेदी
B. सदाचारी आचरण	II. आध्यात्मिक
C. शांति	III. शारीरिक
D. अहिंसा	IV. बौद्धिक

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :

- (1) A - IV, B - III, C - I, D - II
- (2) A - III, B - I, C - II, D - IV
- (3) A - III, B - II, C - IV, D - I
- (4) A - IV, B - I, C - III, D - II

Sl. No.43
QBID:352327

Given below are two statements

Statement I: The National Assessment and Accreditation Council (NAAC) is a constituent unit of UGC.

Statement II: National Board of Accreditation (NBA) was established by UGC with the purpose of evaluating technical programs.

In light of the above statements, choose the **correct** answer from the options given below

- (1) Both Statement I and Statement II are true
- (2) Both Statement I and Statement II are false
- (3) Statement I is true but Statement II is false
- (4) Statement I is false but Statement II is true

नीचे दो कथन दिए गए हैं :

कथन - I : राष्ट्रीय आँकलन और प्रत्यायन परिषद यू.जी.सी.निर्मात्री इकाई है।

कथन - II : यू.जी.सी द्वारा राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (N.B.A.) की स्थापना तकनीकी कार्यक्रमों (प्रोग्राम) के मूल्यांकन के उद्देश्य से की गई थी।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

- (1) कथन I और II दोनों सही हैं।
- (2) कथन I और II दोनों गलत हैं।
- (3) कथन I सत्य है , किन्तु कथन II असत्य है।
- (4) कथन I असत्य है , किन्तु कथन II सत्य है।

1[Option ID=22769]
2[Option ID=22770]
3[Option ID=22771]
4[Option ID=22772]

Who was the Chairman of Kothari Commission?

(1) Dr. D. S. Kothari

(2) Dr. D. P. Kothari

(3) Dr. S. P. Kothari

(4) Dr. T. H. Kothari

कोठारी आयोग के अध्यक्ष कौन थे ?

(1) डा.डी.एस. कोठारी

(2) डा.डी.पी. कोठारी

(3) डा.एस.पी. कोठारी

(4) डा.टी.एच. कोठारी

1[Option ID=22773]

2[Option ID=22774]

3[Option ID=22775]

4[Option ID=22776]

Sl. No.45

QBID:352334

Given below are two statements

Statement I: In ancient India, indigenous education was imparted at home, in temples and gurukuls.

Statement II: In ancient India, students went to viharas for higher knowledge.

In light of the above statements, choose the **correct** answer from the options given below

(1) Both Statement I and Statement II are true

(2) Both Statement I and Statement II are false

(3) Statement I is true but Statement II is false

(4) Statement I is false but Statement II is true

नीचे दो कथन दिए गए हैं :

कथन - I : प्राचीन भारत में देशज शिक्षा घर पर, मंदिरों और गुरुकुलों में प्रदान की जाती थी।

कथन - II : प्राचीन भारत में विद्यार्थी उच्च ज्ञान की प्राप्ति के लिए विहारों में जाते थे।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(1) कथन I और II दोनों सही हैं।

(2) कथन I और II दोनों गलत हैं।

(3) कथन I सत्य है, किन्तु कथन II असत्य है।

(4) कथन I असत्य है, किन्तु कथन II सत्य है।

1[Option ID=22777]

2[Option ID=22778]

3[Option ID=22779]

4[Option ID=22780]

36)

The National Education Policy, 2020 envisages that all higher education institutions will be incentivized, supported and mentored and shall aim to become autonomous; and have an empowered Board of Governors by the year

1. 2025
2. 2030
3. 2035
4. 2040

राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020 का विचार है कि सभी उच्चतर शिक्षा संस्थानों को प्रोत्साहन, समर्थन और विश्वसनीय परामर्श दिया जाएगा, और वे सभी स्वायत्त बनने का लक्ष्य रखेंगे, और निम्नलिखित वर्ष तक एक सशक्त शासी बोर्ड (बी.ओ.जी.) का गठन करेंगे।

1. 2025
2. 2030
3. 2035
4. 2040

[Question ID = 10264][Question Description = 141_0_GP20_SEP22_S2_Q41]

1. 1 [Option ID = 11053]
2. 2 [Option ID = 11054]
3. 3 [Option ID = 11055]
4. 4 [Option ID = 11056]

37)

Who among the following was the Chairperson of the Committee setup by the National Council for Women Education in 1962 to examine the differentiation of curriculum for boys and girls at all stages of education?

1. Bhaktavatsalam
2. Hansa Mehta
3. Durgabai Deshmukh
4. Margaret Cousins

निम्नलिखित में से राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद द्वारा 1962 में नियुक्त की गई उस समिति का अध्यक्ष कौन था, जिसे शिक्षा के सभी चरणों में लड़कों और लड़कियों की पाठ्यचर्या के विभेदन की जांच करने के लिए कहा गया था ?

1. भक्तवत्सलम
2. हंसा मेहता
3. दुर्गाबाई देशमुख
4. मार्ग्रेट कजिन्स

38)

The expenditure on the research and innovation in India, at present, is only ___ % of GDP.

1. 0.20%
2. 0.69%
3. 1.31%
4. 2.14%

वर्तमान में भारत में अनुसंधान और नवाचार पर होने वाला व्यय सकल घरेलू उत्पाद का मात्र _____ प्रतिशत है।

1. 0.20%
2. 0.69%
3. 1.31%
4. 2.14%

[Question ID = 10266][Question Description = 143_0_GP20_SEP22_S2_Q43]

1. 1 [Option ID = 11061]
2. 2 [Option ID = 11062]
3. 3 [Option ID = 11063]
4. 4 [Option ID = 11064]

39)

Given below are two statements

Statement I: To address inter-state variations at all levels of Education, it was brought on to the Concurrent list in the Constitution in 1976.

Statement II: The institutions approved under State Legislative Act are not empowered to award degrees.

In light of the above statements, choose the **correct** answer from the options given below

1. Both Statement I and Statement II are true
2. Both Statement I and Statement II are false
3. Statement I is true but Statement II is false
4. Statement I is false but Statement II is true

नीचे दो कथन दिए गए हैं :

कथन - I : शिक्षा के सभी स्तरों में अन्तर-राज्यीय भिन्नताओं को हल करने के लिए शिक्षा को 1976 में संविधान की समवर्ती सूची में लाया गया।

कथन - II : राज्य विधायी अधिनियम के अन्तर्गत अनुमोदित संस्थानों को उपाधियाँ (डिग्री) देने की शक्ति नहीं होती।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

1. कथन I और II दोनों सत्य हैं।
2. कथन I और II दोनों असत्य हैं।
3. कथन I सत्य है, किन्तु कथन II असत्य है।
4. कथन I असत्य है, किन्तु कथन II सत्य है।

40)

Match **List I** with **List II**

List I	List II
Educational Agencies (Acronyms)	Educational Domains
A. NIOS	I. Teacher Education
B. NCTE	II. Technical Education
C. AICTE	III. Vocational Education
D. NCVET	IV. Distance Education

Choose the **correct** answer from the options given below:

1. A - IV, B - I, C - II, D - III
2. A - I, B - II, C - III, D - IV
3. A - II, B - III, C - IV, D - I
4. A - III, B - IV, C - I, D - II

सूची -I को सूची -II से सुमेलित कीजिए :

सूची -I	सूची -II
शैक्षणिक एजेन्सीज (परिवर्णी)	शैक्षणिक क्षेत्र
A. एन.आई.ओ.एस.	I. अध्यापक शिक्षा
B. एन.सी.टी.ई.	II. तकनीकी शिक्षा
C. ए.आई.सी.टी.ई.	III. व्यावसायिक शिक्षा
D. एन.सी.वी.ई.टी.	IV. दूरस्थ शिक्षा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :

1. A - IV, B - I, C - II, D - III
2. A - I, B - II, C - III, D - IV
3. A - II, B - III, C - IV, D - I
4. A - III, B - IV, C - I, D - II

- 1) Scholars refer to the western perception of Third World societies. They discuss the same when raising the questions of who produces knowledge about Third World women.

An Indian scholar has discovered that women in the Third World are represented in most feminist literature on development as having 'needs' and 'problems' but few choices and no freedom to act. What emerges from such modes of analysis is the image of an average Third World woman constructed through the use of statistics and certain categories. It is said that an average Third World woman leads an, essentially truncated life based on her feminine gender and her being 'third world' - ignorant, poor, uneducated, tradition bound, domestic, family oriented and victimised. This is in contrast to the self-representation of western women as educated, modern with freedom to make their own decisions. These representations assume western standards as the benchmark against which to measure the situation of Third World women.

The result is paternalistic attitude on the part of western women toward their Third World counterparts. It is perpetuation of the hegemonic idea of west's superiority. It is in this process of homogenisation and systematisation of the oppression of women in the Third World, that power is exercised in much of the western feminist discourse. This power needs to be redefined, because of its subjective nature of interpretation.

The Western feminist literature depicts Third World women as having

1. Fewer choices and no freedom
2. Greater support from external influences
3. Benefits of modernisation
4. Become amenable to western influence

विद्वान जन तीसरी दुनिया के समाजों के पश्चिमी प्रत्यक्षण की ओर संकेत करते हैं। जब वे यह प्रश्न उठाते हैं कि तीसरी दुनिया की स्त्रियों संबंधी ज्ञान का सृजन कौन करता है, तो वे इसी की चर्चा करते हैं। एक भारतीय विद्वान ने खोज की है कि विकास संबंधी अधिकांश नारीवादी साहित्य में तीसरी दुनिया की स्त्रियों को 'आवश्यकताएं' और 'समस्याएं' रखने के रूप में प्रस्तुत किया जाता है परन्तु जिनके पास बहुत कम विकल्प होते हैं और कार्य करने की कोई स्वतंत्रता नहीं होती है। इस प्रकार की विश्लेषण विधियों से तीसरी दुनिया की एक औसत स्त्री की छवि उभरती है जिसकी रचना सांख्यिकी और कतिपय श्रेणियों के प्रयोग के माध्यम से की गई होती है। कहा जाता है कि तीसरी दुनिया की एक औसत स्त्री अपने लिंग पर आधारित और 'तीसरी दुनिया'- अनभिज्ञ, निर्धन, अशिक्षित, परम्पराओं से बंधी, घरेलु, परिवारानुसूची और पीड़ित होने के कारण अनिवार्यतः एक रुंडित जीवन व्यतीत करती है। यह छवि पश्चिमी स्त्री के शिक्षित, आधुनिक और अपने निर्णय स्वयं करने की स्वतंत्रता रखने के स्व-चित्रण से विपरीत है। ये चित्रण यह कल्पना करते हैं कि पश्चिमी मानक वे निर्देश चिन्ह हैं जिनसे तीसरी दुनिया की स्त्रियों की स्थिति को मापा जाए। इसका परिणाम है पश्चिमी स्त्रियों की तीसरी दुनिया की स्त्रियों के प्रति पितृसत्तात्मक अभिवृत्ति। यह पश्चिम की श्रेष्ठता के प्राधान्य विचार का सततीकरण है। तीसरी दुनिया में स्त्रियों के उत्पीड़न के समरूपीकरण और व्यवस्थापन की इसी प्रक्रिया में, अधिकांश पश्चिमी नारीवादी विमर्श में शक्ति का प्रयोग किया जाता है। इस शक्ति को व्याख्या की अपनी विषयनिष्ठ प्रकृति के कारण पुनः परिभाषित किए जाने की आवश्यकता है।

पश्चिमी नारीवादी साहित्य तीसरी दुनिया की स्त्रियों को निम्नलिखित में से किस रूप में चित्रित करता है ?

1. जिनके पास कम विकल्प हैं और कोई स्वतंत्रता नहीं है
2. बाह्य प्रभावों से महत्तर समर्थन
3. आधुनिकीकरण की प्रसुविधाएं
4. पश्चिमी प्रभाव के अधीन

[Question ID = 10269][Question Description = 146_0_GP20_SEP22_S2_Q46]

1. 1 [Option ID = 11073]
2. 2 [Option ID = 11074]
3. 3 [Option ID = 11075]

- 2) Scholars refer to the western perception of Third World societies. They discuss the same when raising the questions of who produces knowledge about Third World women.

An Indian scholar has discovered that women in the Third World are represented in most feminist literature on development as having 'needs' and 'problems' but few choices and no freedom to act. What emerges from such modes of analysis is the image of an average Third World woman constructed through the use of statistics and certain categories. It is said that an average Third World woman leads an, essentially truncated life based on her feminine gender and her being 'third world' - ignorant, poor, uneducated, tradition bound, domestic, family oriented and victimised. This is in contrast to the self-representation of western women as educated, modern with freedom to make their own decisions. These representations assume western standards as the benchmark against which to measure the situation of Third World women.

The result is paternalistic attitude on the part of western women toward their Third World counterparts. It is perpetuation of the hegemonic idea of west's superiority. It is in this process of homogenisation and systematisation of the oppression of women in the Third World, that power is exercised in much of the western feminist discourse. This power needs to be redefined, because of its subjective nature of interpretation.

The Third World women have an image constructed through the parameters of

1. Compassionate representation
2. Quantification and categorisation
3. Geographical proximation
4. Familial issues

विद्वान जन तीसरी दुनिया के समाजों के पश्चिमी प्रत्यक्षण की ओर संकेत करते हैं। जब वे यह प्रश्न उठाते हैं कि तीसरी दुनिया की स्त्रियों संबंधी ज्ञान का सृजन कौन करता है, तो वे इसी की चर्चा करते हैं। एक भारतीय विद्वान ने खोज की है कि विकास संबंधी अधिकांश नारीवादी साहित्य में तीसरी दुनिया की स्त्रियों को 'आवश्यकताएं' और 'समस्याएं' रखने के रूप में प्रस्तुत किया जाता है परन्तु जिनके पास बहुत कम विकल्प होते हैं और कार्य करने की कोई स्वतंत्रता नहीं होती है। इस प्रकार की विश्लेषण विधियों से तीसरी दुनिया की एक औसत स्त्री की छवि उभरती है जिसकी रचना सांख्यिकी और कतिपय श्रेणियों के प्रयोग के माध्यम से की गई होती है। कहा जाता है कि तीसरी दुनिया की एक औसत स्त्री अपने लिंग पर आधारित और 'तीसरी दुनिया'- अनभिज्ञ, निर्धन, अशिक्षित, परम्पराओं से बंधी, घरेलु, परिवारानुष्ठा और पीड़ित होने के कारण अनिवार्यतः एक रुंडित जीवन व्यतीत करती है। यह छवि पश्चिमी स्त्री के शिक्षित, आधुनिक और अपने निर्णय स्वयं करने की स्वतंत्रता रखने के स्व-चित्रण से विपरीत है। ये चित्रण यह कल्पना करते हैं कि पश्चिमी मानक वे निर्देश चिन्ह हैं जिनसे तीसरी दुनिया की स्त्रियों की स्थिति को मापा जाए। इसका परिणाम है पश्चिमी स्त्रियों की तीसरी दुनिया की स्त्रियों के प्रति पितृसत्तात्मक अभिवृत्ति। यह पश्चिम की श्रेष्ठता के प्राधान्य विचार का सततीकरण है। तीसरी दुनिया में स्त्रियों के उत्पीड़न के समरूपीकरण और व्यवस्थापन की इसी प्रक्रिया में, अधिकांश पश्चिमी नारीवादी विमर्श में शक्ति का प्रयोग किया जाता है। इस शक्ति को व्याख्या की अपनी विषयनिष्ठ प्रकृति के कारण पुनः परिभाषित किए जाने की आवश्यकता है।

तीसरी दुनिया की महिला की छवि किन मानकों के द्वारा निर्मित होती है :

1. सहानुभूतिशील चित्रण
2. परिमाणन और श्रेणीकरण
3. भौगोलिक सामीप्य
4. कौटुंबिक मुद्दे

[Question ID = 10270][Question Description = 147_0_GP20_SEP22_S2_Q47]

1. 1 [Option ID = 11077]
2. 2 [Option ID = 11078]
3. 3 [Option ID = 11079]
4. 4 [Option ID = 11080]

- 3) Scholars refer to the western perception of Third World societies. They discuss the same when raising the questions of who produces knowledge about Third World women.

An Indian scholar has discovered that women in the Third World are represented in most feminist literature on development as having 'needs' and 'problems' but few choices and no freedom to act. What emerges from such modes of analysis is the image of an average Third World woman constructed through the use of statistics and certain categories. It is said that an average Third World woman leads an, essentially truncated life based on her feminine gender and her being 'third world' - ignorant, poor, uneducated, tradition bound, domestic, family oriented and victimised. This is in contrast to the self-representation of western women as educated, modern with freedom to make their own decisions. These representations assume western standards as the benchmark against which to measure the situation of Third World women.

The result is paternalistic attitude on the part of western women toward their Third World counterparts. It is perpetuation of the hegemonic idea of west's superiority. It is in this process of homogenisation and systematisation of the oppression of women in the Third World, that power is exercised in much of the western feminist discourse. This power needs to be redefined, because of its subjective nature of interpretation.

The western women consider themselves as

1. Saviours of oppressed women
2. Agents of homogenisation
3. Modern and free
4. Equally exploited like Third World women

विद्वान् जन तीसरी दुनिया के समाजों के पश्चिमी प्रत्यक्षण की ओर संकेत करते हैं। जब वे यह प्रश्न उठाते हैं कि तीसरी दुनिया की स्त्रियों संबंधी ज्ञान का सृजन कौन करता है, तो वे इसी की चर्चा करते हैं। एक भारतीय विद्वान ने खोज की है कि विकास संबंधी अधिकांश नारीवादी साहित्य में तीसरी दुनिया की स्त्रियों की 'आवश्यकताएं' और 'समस्याएं' रखने के रूप में प्रस्तुत किया जाता है परन्तु जिनके पास बहुत कम विकल्प होते हैं और कार्य करने की कोई स्वतंत्रता नहीं होती है। इस प्रकार की विश्लेषण विधियों से तीसरी दुनिया की एक औसत स्त्री की छवि उभरती है जिसकी रचना सांख्यिकी और कतिपय श्रेणियों के प्रयोग के माध्यम से की गई होती है। कहा जाता है कि तीसरी दुनिया की एक औसत स्त्री अपने लिंग पर आधारित और 'तीसरी दुनिया'- अनभिज्ञ, निर्धन, अशिक्षित, परम्पराओं से बंधी, घरेलु, परिवार-मुखी और पीड़ित होने के कारण अनिवार्यतः एक रुंडित जीवन व्यतीत करती है। यह छवि पश्चिमी स्त्री के शिक्षित, आधुनिक और अपने निर्णय स्वयं करने की स्वतंत्रता रखने के स्व-चित्रण से विपरीत है। ये चित्रण यह कल्पना करते हैं कि पश्चिमी मानक वे निर्देश चिह्न हैं जिनसे तीसरी दुनिया की स्त्रियों की स्थिति को मापा जाए। इसका परिणाम है पश्चिमी स्त्रियों की तीसरी दुनिया की स्त्रियों के प्रति पितृसत्तात्मक अभिवृत्ति। यह पश्चिम की श्रेष्ठता के प्राधान्य विचार का सततीकरण है। तीसरी दुनिया में स्त्रियों के उत्पीड़न के समरूपीकरण और व्यवस्थापन की इसी प्रक्रिया में, अधिकांश पश्चिमी नारीवादी विमर्श में शक्ति का प्रयोग किया जाता है। इस शक्ति को व्याख्या की अपनी विषयनिष्ठ प्रकृति के कारण पुनः परिभाषित किए जाने की आवश्यकता है।

पश्चिमी महिला अपने आप को इस रूप में मानती है:

1. उत्पीड़ित महिला के उद्धारक
2. सजातीयकरण की अभिकर्ता (एजेन्ट)
3. आधुनिक और स्वतंत्र
4. तीसरी दुनिया की महिला जैसी समान रूप से शोषित

[Question ID = 10271][Question Description = 148_0_GP20_SEP22_S2_Q48]

1. 1 [Option ID = 11081]
2. 2 [Option ID = 11082]
3. 3 [Option ID = 11083]
4. 4 [Option ID = 11084]

- 4) Scholars refer to the western perception of Third World societies. They discuss the same when raising the questions of who produces knowledge about Third World women.

An Indian scholar has discovered that women in the Third World are represented in most feminist literature on development as having 'needs' and 'problems' but few choices and no freedom to act. What emerges from such modes of analysis is the image of an average Third World woman constructed through the use of statistics and certain categories. It is said that an average Third World woman leads an, essentially truncated life based on her feminine gender and her being 'third world' - ignorant, poor, uneducated, tradition bound, domestic, family oriented and victimised. This is in contrast to the self-representation of western women as educated, modern with freedom to make their own decisions. These representations assume western standards as the benchmark against which to measure the situation of Third World women.

The result is paternalistic attitude on the part of western women toward their Third World counterparts. It is perpetuation of the hegemonic idea of west's superiority. It is in this process of homogenisation and systematisation of the oppression of women in the Third World, that power is exercised in much of the western feminist discourse. This power needs to be redefined, because of its subjective nature of interpretation.

The western feminist literature looks at Third World women with

1. In-depth knowledge of their issues
2. An urge to liberate them
3. The need to enforce universal values
4. Western standards as real benchmarks

विद्वान् जन तीसरी दुनिया के समाजों के पश्चिमी प्रत्यक्षण की ओर संकेत करते हैं। जब वे यह प्रश्न उठाते हैं कि तीसरी दुनिया की स्त्रियों संबंधी ज्ञान का सृजन कौन करता है, तो वे इसी की चर्चा करते हैं। एक भारतीय विद्वान ने खोज की है कि विकास संबंधी अधिकांश नारीवादी साहित्य में तीसरी दुनिया की स्त्रियों को 'आवश्यकताएं' और 'समस्याएं' रखने के रूप में प्रस्तुत किया जाता है परन्तु जिनके पास बहुत कम विकल्प होते हैं और कार्य करने की कोई स्वतंत्रता नहीं होती है। इस प्रकार की विश्लेषण विधियों से तीसरी दुनिया की एक औसत स्त्री की छवि उभरती है जिसकी रचना सांख्यिकी और कतिपय श्रेणियों के प्रयोग के माध्यम से की गई होती है। कहा जाता है कि तीसरी दुनिया की एक औसत स्त्री अपने लिंग पर आधारित और 'तीसरी दुनिया'- अनभिज्ञ, निर्धन, अशिक्षित, परम्पराओं से बंधी, घरेलु, परिवारोन्मुखी और पीड़ित होने के कारण अनिवार्यतः एक रुंडित जीवन व्यतीत करती है। यह छवि पश्चिमी स्त्री के शिक्षित, आधुनिक और अपने निर्णय स्वयं करने की स्वतंत्रता रखने के स्व-चित्रण से विपरीत है। ये चित्रण यह कल्पना करते हैं कि पश्चिमी मानक वे निर्देश चिन्ह हैं जिनसे तीसरी दुनिया की स्त्रियों की स्थिति को मापा जाए। इसका परिणाम है पश्चिमी स्त्रियों की तीसरी दुनिया की स्त्रियों के प्रति पितृसत्तात्मक अभिवृत्ति। यह पश्चिम की श्रेष्ठता के प्राधान्य विचार का सततीकरण है। तीसरी दुनिया में स्त्रियों के उत्पीड़न के समरूपीकरण और व्यवस्थापन की इसी प्रक्रिया में, अधिकांश पश्चिमी नारीवादी विमर्श में शक्ति का प्रयोग किया जाता है। इस शक्ति को व्याख्या की अपनी विषयनिष्ठ प्रकृति के कारण पुनः परिभाषित किए जाने की आवश्यकता है।

पश्चिमी नारीवादी साहित्य तीसरी दुनिया की महिला को निम्नलिखित के साथ देखता है :

1. उनके मुद्दों का गहन ज्ञान
2. उन्हें मुक्त कराने का आवेग
3. सार्वभौमिक मूल्यों को लागू करने की आवश्यकता
4. वास्तविक कसौटी के रूप में पश्चिमी मानक

[Question ID = 10272][Question Description = 149_0_GP20_SEP22_S2_Q49]

1. 1 [Option ID = 11085]
2. 2 [Option ID = 11086]
3. 3 [Option ID = 11087]
4. 4 [Option ID = 11088]

- 5) Scholars refer to the western perception of Third World societies. They discuss the same when raising the questions of who produces knowledge about Third World women.

An Indian scholar has discovered that women in the Third World are represented in most feminist literature on development as having 'needs' and 'problems' but few choices and no freedom to act. What emerges from such modes of analysis is the image of an average Third World woman constructed through the use of statistics and certain categories. It is said that an average Third World woman leads an, essentially truncated life based on her feminine gender and her being 'third world' - ignorant, poor, uneducated, tradition bound, domestic, family oriented and victimised. This is in contrast to the self-representation of western women as educated, modern with freedom to make their own decisions. These representations assume western standards as the benchmark against which to measure the situation of Third World women.

The result is paternalistic attitude on the part of western women toward their Third World counterparts. It is perpetuation of the hegemonic idea of west's superiority. It is in this process of homogenisation and systematisation of the oppression of women in the Third World, that power is exercised in much of the western feminist discourse. This power needs to be redefined, because of its subjective nature of interpretation.

The passage is critical of

1. The submissive Third World women
2. Modernised western women
3. Hegemonic ideas of western superiority
4. Homogenisation of feminist discourse

विद्वान् जन तीसरी दुनिया के समाजों के पश्चिमी प्रत्यक्षण की ओर संकेत करते हैं। जब वे यह प्रश्न उठाते हैं कि तीसरी दुनिया की स्त्रियों संबंधी ज्ञान का सृजन कौन करता है, तो वे इसी की चर्चा करते हैं। एक भारतीय विद्वान ने खोज की है कि विकास संबंधी अधिकांश नारीवादी साहित्य में तीसरी दुनिया की स्त्रियों की 'आवश्यकताएं' और 'समस्याएं' रखने के रूप में प्रस्तुत किया जाता है परन्तु जिनके पास बहुत कम विकल्प होते हैं और कार्य करने की कोई स्वतंत्रता नहीं होती है। इस प्रकार की विश्लेषण विधियों से तीसरी दुनिया की एक औसत स्त्री की छवि उभरती है जिसकी रचना सांख्यिकी और कतिपय श्रेणियों के प्रयोग के माध्यम से की गई होती है। कहा जाता है कि तीसरी दुनिया की एक औसत स्त्री अपने लिंग पर आधारित और 'तीसरी दुनिया'- अनभिज्ञ, निर्धन, अशिक्षित, परम्पराओं से बंधी, घरेलू, परिवारान्मुखी और पीड़ित होने के कारण अनिवार्यतः एक रुंडित जीवन व्यतीत करती है। यह छवि पश्चिमी स्त्री के शिक्षित, आधुनिक और अपने निर्णय स्वयं करने की स्वतंत्रता रखने के स्व-चित्रण से विपरीत है। ये चित्रण यह कल्पना करते हैं कि पश्चिमी मानक वे निर्देश चिन्ह हैं जिनसे तीसरी दुनिया की स्त्रियों की स्थिति को मापा जाए। इसका परिणाम है पश्चिमी स्त्रियों की तीसरी दुनिया की स्त्रियों के प्रति पितृसत्तात्मक अभिवृत्ति। यह पश्चिम की श्रेष्ठता के प्राधान्य विचार का सततीकरण है। तीसरी दुनिया में स्त्रियों के उत्पीड़न के समरूपीकरण और व्यवस्थापन की इसी प्रक्रिया में, अधिकांश पश्चिमी नारीवादी विमर्श में शक्ति का प्रयोग किया जाता है। इस शक्ति को व्याख्या की अपनी विषयनिष्ठ प्रकृति के कारण पुनः परिभाषित किए जाने की आवश्यकता है।

गद्यांश निम्नलिखित की आलोचना करता है :

1. विनम्र तीसरी दुनिया की महिला की
2. आधुनिकीकृत पश्चिमी महिला की
3. पश्चिमी श्रेष्ठता के प्रमुख विचार की
4. नारीवादी विमर्श के सजातीयकरण की

[Question ID = 10273][Question Description = 150_0_GP20_SEP22_S2_Q50]

1. 1 [Option ID = 11089]
2. 2 [Option ID = 11090]
3. 3 [Option ID = 11091]